अपना भविष्य जानो

गहन चिंतक – सिद्धांतज्ञ

उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कृति :

अपना भविष्य जानो

शुभाशीष : जैनाचार्य श्री विरागसागरजी महाराज

लेखक

प्रखर वक्ता उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

तृतीयावृत्ति 2200 प्रतियाँ

चतुर्थावृत्ति : 2000 प्रतियाँ फिरोजाबाद

पंचमावृत्ति :

प्रकाशक

धर्म प्रभावना ट्रस्ट न्यास, भिण्ड

09826801542

द्रव्य सहयोगी

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड

देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना फोन -07580-223344

सीपुर समता तीर्थ धाम, सीपुर मो. 9828613614

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक :- मुकेश जैन, मो.: 92149-31295

आर्यन् एजेन्सीज्

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुनः प्रकाशन हेतु ज्ञानदान राशि 15/- रू. मात्र

पहिले इसे पढ़ें

भविष्य की बात सुनते ही सोता हुआ आदमी भी जागकर सतर्कता से बैठकर सुनने को तैयार हो जाये तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि भविष्य को जानने के लिए हर आदमी पूर्व से ही तैयार बैठा हुआ है। ऐसे में व्यक्ति को अपना ही भविष्य सुनने को मिल जाये तो फिर कहना ही क्या ? भविष्य वक्ता होने का मतलब है जिंदगी के हर पहलू का विशेष ज्ञान होना। ब्रह्याण्ड में क्या-क्या घटित होगा और हमारे साथ क्या-क्या घटित होगा यह भविष्य ही उजागर करता है। भविष्य में कब, कहाँ पर क्या-क्या, कैसे-कैसे किसके द्वारा घटित होना है या होगा ? इस बात को बारीकी से केवल भगवान ही बता सकते हैं। या कोई अवधिज्ञानी या मनःपर्यय ज्ञानी मुनिराज बता सकते हैं, आज के संतों में इतनी कुव्वत कहाँ कि बारीकी से भविष्य को उजागर कर सकें।

भविष्य जानने के कुछ सूत्र हैं जिसमें गणित का भी प्रयोग किया है, मनोविज्ञान का भी प्रयोग किया है, तर्क का भी प्रयोग किया और प्राचीन महर्षियों की वाणी का भी प्रयोग किया है और अपने विवेक चिंतन का भी प्रयोग किया है, एक बार ज्योतिषियों का कथन वैज्ञानिकों का कथन गलत हो सकता है लेकिन ऋषियों का कथन गलत कहने की किसी में भी हिम्मत नहीं है। होनी और अनहोनी दुनियाँ में कोई चीज नहीं हमारी ज्ञान की पर्यायें हैं, जिस बात को हम पूर्व से ही जानते हैं और वह हमारे सामने घटित हो जाये तो उसे हम होनी कहने लगते हैं लेकिन जो बात हमें पूर्व में पता नहीं थी और वह अचानक मेरे सामने घटित हो जाये इसे ही अनहोनी कहते है।

यदि हम अपने भविष्य को अच्छी तरह से जान लेंगे तो हमारे जीवन में अनहोनी का नामोनिशान ही मिट जायेगा जब अनहोनी का नामोनिशान ही मिट जायेगा तो घटना होने पर दु:ख नहीं होगा। यदि कोई 85 वर्ष का है, किसी ने कहा 86 वर्ष में मरना होगा दु:ख की बात नहीं। अन्य लोगों को भी अधिक दु:ख नहीं होगा, लेकिन कोई 25 वर्ष का है और अचानक मर जाये तो सदमा बैठ सकता है और हार्ट अटैक हो सकता है, दु:ख बहुत होगा। ये अनहोनी अज्ञान की पर्याय हैं और होनी ज्ञान की पर्याय हैं।

आओ हम सभी अपना-अपना भविष्य जानने के लिए कुछ मशक्कत करें, दिमाग की कसरत करें और आज भविष्य को जानकर अपना वर्तमान उज्ज्वल करें हमने अल्प चिंतन द्वारा परम पूज्य गुरूवर के शुभाशीष से ''अपना भविष्य जानो'' पर प्रवचन किया था, उस प्रवचन को बाल ब्रह्चारिणी आर्यिका विमलश्री (M.A.संस्कृत) व आर्यिका विनेहश्री (M.A. संस्कृत) ने इसे लिपिबद्ध करके आप सभी के हाथों में पहुँचा दिया है। इस ज्ञान की प्रभावना के लिए हमारा दोनों आर्यिकाओं को आत्मकल्याण हेतु मंगलमय शुभाशीर्वाद है।

-Acharya Vinamra Sagar

मेरे उद्गार

हर व्यक्ति के जीवन में यह उत्सुकता बनी ही रहती है कि हमारा भविष्य क्या होगा ? अथवा हमें अपने भविष्य का पूर्व में ही पता लग जाये तो हम अच्छा पुरूषार्थ करके भविष्य में आने वाली परेशानी को मिटा दें, जिससे हमें आगे कोई किसी भी प्रकार का दु:ख न हो। भविष्य का पता लगेगा और भविष्य को सुधारने का मन बनेगा तो वर्तमान में ही बनेगा। वर्तमान Condition वह Condition है, जहाँ पर अतीत भी नजर आता है और अनागत भी स्पष्ट दिखाई देता है। जो वर्तमान नहीं देख सकता है, वह न अनागत देख सकता है, न ही अतीत जान सकता है।

अच्छा भाव अच्छे भविष्य का और बुरा भाव बुरे भविष्य का निर्माता है और अपने भावों को समझना स्वयं को जानने की सबसे बड़ी कला है, जो अपने ही विचारों को स्वयं नहीं पढ़ सकता, जो अपने भावों को दर्पण की भाँति स्वयं ही नहीं समझ सकता वह अपना भविष्य दूसरों से पूँछता फिरता है, दूसरों से पूँछा गया भविष्य सही हो यह जरूरी नहीं लेकिन स्वयं की समझ से निकला भविष्य पूर्णत: सही होगा, यह बात परम सत्य है। इसमें शंका का कहीं भी स्थान नहीं है।

परम पूज्य आचार्य श्री सैद्धान्तिक ज्ञान के कीड़ा, न्याय और नय में पारंगत चारों अनुयोग सहित धवलाजी, जयधवलाजी, महाधवलाजी का अध्ययन करने के साथ-साथ वर्तमान में गहन चिंतक है। हर बात को तर्क की कसौटी पर कसकर ही स्वीकार करते हैं, हर चिंतन में मनोविज्ञान व विज्ञान झलकता है, सरलता-सौम्यता-समता-सहजता जिनके व्यवहार में स्पष्ट नजर आती है। विवादित पंथों से या मान्यताओं से दूर हमेशा वीतरागता और निर्ग्रन्थता के उपासक हैं।

पूज्य आचार्य श्री ने भगवान कुंदकुंद की गाथा पर आधारित अपना चिंतन Know your future को प्रवचन रूप में सुनाया जो हर व्यक्ति के दिल को छूने वाला था, जिसने भी सुना उसने इसे सराहा इसलिये ऐसे दिव्यमयी विशेष चिंतन को हमने Collect किया और आपके सामने प्रेषित करने का प्रयास किया।

ऐसे दुर्लभ चिंतन जो किन्हीं-किन्हीं विशेष ज्ञानी मुनिराजों में मिलते हैं, यदि यह कह दिया जाए कि सैंकड़ों हजारों लोगों में से विरले ही लोगों में इस प्रकार की तर्क शक्ति पाई जाती है और उन विरले लोगों में से एक हैं ''परम पूज्य आचार्य श्री विनम्रसागरजी'' तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारा उद्देश्य बस यही है कि ऐसे दुर्लभ चिंतन जन साधारण तक पहुँचाये जायें। जिससे प्रत्येक मनुष्य अपना कल्याण कर सके।

हम भविष्य में यही आशा करते हैं कि पूज्य आचार्य श्री हमें नये-नये चिंतनों से विभूषित करते रहें जिससे हमारा ज्ञान उज्ज्वल हो और हम साधना के पथ पर अपने कदम बढ़ा सकें व अपनी मंजिल को सहजता से पा सकें।

गुरुदेव के युगल चरणों में श्रद्धा सहित त्रयभक्तियुक्त विनम्र नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!

-आर्यिका विमलश्री व विनेहश्री माताजी

(M.A. संस्कृत)

बुंदेलखण्ड (बबीना-ललितपुर) उत्तरप्रदेश

अपना भविष्य जानो

महर्षियों ने अपने अनुभव में सबकुछ समेट लिया जो इस दुनियाँ में घटित हो रहा है, आज से हजारों वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने सब बता दिया था जो भी अभी घटित हो रहा है। आगे क्या-क्या घटित होगा ये भी भगवान ने बता दिया है यह बात अलग है हम उनकी बात को या तो हृदय से स्वीकार करें या अनदेखी करते हुए नकार दें। हमारे नकार देने से यह बात दुनियाँ में गलत नहीं हो जायेगी ये हो सकता है, कि हम ही दुनियाँ में गलत हो जायें। विश्व के गर्भ में छिपी हुई घटनाएँ भगवान के ज्ञान में आज भी प्रत्यक्ष हैं, यदि भगवान इस धरती पर होते तो हमें किसी भी घटना को घटने से पूर्व समझने में कोई परेशानी नहीं होती।

आदा णाण पमाणं णाणं णेयप्पमाण-मुद्दिट्ठं।

णेयं लोयालोयं तम्हा णाणं तु सव्वगयं।।प्र.सा.23।।

महर्षि कुंदकुंद भगवान ने कहा कि यदि हम अपनी आत्मा का प्रमाण बनाना चाहें तो बहुत ही मुश्किल में पड़ जायेंगे उसे ज्ञान के प्रमाण मानना ही उचित होगा और ज्ञान की अंतिम सीमा बनाना, उसका प्रमाण बनाना और भी कठिन है। ज्ञान को विश्व का प्रमाण मानना उचित होगा और विश्व में वह सब है जिसके बारे में हम सोचते हैं, जानते हैं। ज्ञान में सोचना-जानना ही होता है, जिसको भी सोचा जाये और जाना जाये वह ज्ञान में ही गर्भित होगा।

ज्ञान का नाम सुनते ही हर प्राणी का रोम-रोम पुलकित होता हुआ खिल उठता है। ज्ञान एक ऐसी वस्तु है, जिसकी पिपासा हर आदमी में देखी जाती है, आदमी ज्ञान के लिए ही बच्चों की फीस में लाखों रूपये खर्च कर देता है। एक विद्यार्थी 25 वर्ष तक अपना सारा जीवन ज्ञान को पाने में ही लगा देता है, आश्चर्य यह है कि इतने दिन व धन व्यय करने के बावजूद भी वह युवा अपने जीवन को नहीं जान पाता है। ज्ञान की पिपासा कब पूर्ण होगी ? और इसका उद्गम कहाँ से हुआ ? इसका उत्तर ढूँढ़ पाना कठिन ही नहीं

मुश्किल भी है। आज की दुनियाँ में कोई ऐसा नजर नहीं आता है, जिसकी ज्ञान की पिपासा शांत हो गई हो जब ऐसा व्यक्ति ही नहीं है तो ज्ञान का अंतिम छोर हमें बताने वाला कौन हो सकता है ?

किसी नगर में एनाउन्स (Anounce) हो जाये कि अमुक स्थान पर कल ज्ञान बाँटा जायेगा जिसको भी चाहिए वह वहाँ पहुँचकर ले सकता है, कल्पना करो शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो वहाँ न जाये, सारा नगर ही पहुँच जायेगा। ज्ञान ही भविष्य का निर्माता है, भविष्य का ज्ञाता है। ज्ञान से कुछ छिपा नहीं है वह सभी को जानता है।

दुनियाँ के हर क्षेत्र में ज्ञान की महत्ता है और अपने गुणों में भी ज्ञानगुण ही परम पूज्य है। ज्ञान से व्यक्ति का बढ़प्पन होता है। उम्र से शरीर बड़ा होता है, शरीर से बड़ा होना अज्ञान का प्रतीक है, ज्ञान से बड़ा होना ज्ञान का प्रतीक है। ज्ञान ही प्रभावशाली होता है, उम्र नहीं।

अक्ल बड़ी या भैंस

एक बार की बात है एक मित्र ने अपने दूसरे मित्र से ये प्रश्न किया कि "अक्ल बड़ी या भैंस"। दिखने में तो भैंस बड़ी है अक्ल तो छोटी होती है, दूसरी बात भैंस के दूध से ही अक्ल आती है। दूसरे पक्ष पर देखें अक्ल ही भैंस को भैंस कहलवाती है, अक्ल नहीं हो तो भैंस, कुत्ता भी हो सकती है, गाय भी हो सकती है।

जब दूसरे मित्र ने ये सुना तो बहुत देर तक सोचता रहा कि अक्ल तो आदमी में होती है लेकिन भैंस का संबंध अक्ल से किया जाये यह तो अक्ल की तोहिनी है। जहाँ-जहाँ अक्ल हो वहाँ-वहाँ भैंस हो ये जरूरी नहीं है और जहाँ-जहाँ भैंस हो वहाँ-वहाँ अक्ल हो ये भी जरूरी नहीं है, अक्ल और भैंस का कोई भी संबंध किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं बैठता है। अक्ल की कोई

बात नहीं है, अक्ल के बिना आदमी लोक व्यवहार आदि कुछ नहीं कर सकता है, भैंस को इससे कोई मतलब नहीं अक्ल आदमी में दिव्यता पैदा करके देव से देवाधिदेव और महादेव तक बना देती है लेकिन भैंस देव और दिव्यता तो नहीं देती है, तुम्हें वह अपने साथ जानवर बना सकती है क्योंकि जब भैंसों को चराते हैं तब भैंसों की तरह चिल्लाना भी पड़ता है। अक्ल हमारे अन्दर फुर्ती पैदा करती है लेकिन भैंस को देखते ही आलस्य उमड़ने लगता है उसका दूध दही प्रयोग करते ही प्रमाद आने लगता है।

एक बार की बात है। शिक्षक ने एक बच्चे से पूछा कि अक्ल बड़ी या भैंस। बच्चा गाँव का था **''अक्ल से पैदल''** बहुत देर तक सोचता रहा कि भैंस तो देखी है काफी बड़ी और भारी होती है लेकिन अक्ल का नाम पहली बार सुन रहा हूँ। ऐसा सोचते हुए वह तपाक से बोला- सर भैंस बड़ी होती है। शिक्षक बहुत देर तक उस बच्चे की तरफ देखता रहा, आखिर क्या कह रहा है, उनके मन में तुरंत दूसरा एक प्रश्न तैयार हुआ उसने फिर बच्चे की ओर मुखातिब होते हुए कहा- अच्छा ये बताओ यदि कोई देव इस धरती पर आ जाये और सभी लोगों से ये बात कहे- कि मैंने सभी के लिए यहाँ दो खिड़की खोली हैं जिनमें एक पर भैंस मिलेगी और एक पर अक्ल, तो आप किस लाईन में खड़े होकर क्या लेना पंसद करेंगे ? बच्चा फिर झट से बोला- सर, मैं भैंस की लाईन में खड़ा होऊँगा और भैंस लेना पंसद करूँगा। शिक्षक फिर हैरान सा हुआ और बच्चे से बोला- बेटे यदि मेरे शिक्षक मुझसे ये प्रश्न करते तो मैं अपने सर से कहता- कि मैं अक्ल की लाईन में लगूँगा। बच्चे ने फिर सर की तरफ देखते हुए उत्तर दिया- सर, जिसको, जिसकी कमी होती है वह, वही चाहता है और जिसको, जिसकी जरूरत होगी वह उसी लाईन में लगेगा। हमें भैंस की जरूरत है, हम भैंस की लाईन में लगेंगे, आपको अक्ल की जरूरत है तो आप अक्ल की लाईन में लगेंगे। (सारी पब्लिक में हँसी) शिक्षक बच्चे की तार्किक शक्ति पर चकित था।

आज यह मुहावरा कई लोगों की जुबान पर देखा जाता है लेकिन 95

प्रतिशत लोगों को यह बात नहीं मालूम कि यह मुहावरा गलत है, बे-तुका है। सिद्ध होगा तो गलती पर गलती हो जायेगी। जैसे- यदि एक रेल की गति 200 किलोमीटर प्रतिघंटा है तो अटल बिहारी की उम्र कितनी होगी? ये सवाल ही बे-तुका है, इसकी कोई तुक ही नहीं बैठती। रेल की रफ्तार का किसी की उम्र से क्या ताल्लुक। ठीक वैसे ही अक्ल से भैंस का क्या ताल्लुक। इस मुहावरे का सही रूप है **''अक्ल बड़ी या वयस्'** ' वयस् का मतलब **'उम्र'** होता है अब बिल्कुल सही बैठ जाता है कि अक्ल बड़ी या उम्र ? तो सही उत्तर है अक्ल। उम्र से बड़ा होने से कोई फायदा नहीं, कीमत तो ज्ञान की है, अक्ल की है।

एक मजदूर शरीर से 8 घंटे पसीने बहाता है और 200/- रूपये कमाता है, एक जज अक्ल से 4 घण्टे जजमेंट देता है, 1000/- रूपये कमाता है कीमत अक्ल की है, शरीर की नहीं। भगवान महावीर ने 42 वर्ष में केवलज्ञान प्राप्त कर लिया लेकिन उनके पिता श्री सिद्धार्थ जी को 80 वर्ष में भी केवलज्ञान नहीं हुआ, गौतम गणधर को 70 वर्ष में भी केवलज्ञान नहीं हुआ भगवान महावीर श्रेष्ठ कहलाये क्योंकि उनके पास ज्ञान था, अक्ल की पूर्णता थी। गौतम गणधर और सिद्धार्थ, महावीर से श्रेष्ठ नहीं कहलाए, जबकि उनके पास बड़ी उम्र थी।

अतः उम्र से ज्ञान बड़ा है, इसलिए सूक्ति का सही रूप **''अक्ल बड़ी या वयस्''** यही है ये बात अलग है कि वयस् कहते-कहते जो कम पढ़े लिखे लोग थे उनके मुँह पर वैस हो गया और बदलते-बदलते वह भैंस रूप में प्रचलित हो गया, तब से भैंस ही चला आ रहा है। वयस् शब्द हम सभी लोगों के मुख पर चलन में नहीं है और भैंस चलन में है। इसलिए इस घटना को अंजाम मिल गया।

ग्वालियर में एस. एफ. की 34 बटालियन एक स्थानपर थी अंग्रेज लोगों का शासन था तो वे लोग उसे थर्टीफॉर बटालियन कहते थे,

जल्दी-जल्दी में थाटीफॉर बोलने लगे, फिर कुछ लोगों ने सुना तो थाटीपुर कहने लगे फिर लोगों को था के साथ ट बोलने में असुविधा हुई तो ठाटीपुर कहने लगे अब उस स्थान का नाम ठाटीपुर है किसी से पूछते हैं कि ठाटीपुर नाम कैसे पड़ा ? तो वहाँ के ही लोग नहीं बता पाते। कभी-कभी सही बात के गलत के साथ हाथ-पैर टूट जाते हैं और असत्य का चलन हो जाता है, फिर असत्य ही सत्य लगने लगता है।

आज ज्ञान की कमी हर आदमी को खलती है, ज्ञान वह दर्पण है, जिसमें हमारे कई चेहरे स्पष्ट झलकते हैं, भगवान के ज्ञान में, हम करोड़ों वर्ष पूर्व क्या थे ? हमने क्या-क्या सोचा था ? हमने क्या-क्या खाया था ? सभी दर्पणवत् नजर आता है और हम लाखों करोड़ों वर्ष बाद क्या होंगे उस पर्याय में जाकर हम क्या करेंगे ? क्या सोचेंगे क्या खायेंगे ? और कहाँ पर जन्मेंगे आदि-आदि ये सभी बातें भगवान को स्पष्टत: नजर आती हैं ये सब आत्मा की निर्मलता का परिणाम है यदि हम अपने परिणामों को कषायोद्रेक रहित निर्मल बनायें तो हमारी आत्मा के दर्पण में भविष्य की कई बातें आईने की तरह स्पष्ट झलकने लगेंगी। आईना जितना साफ होगा उसमें वस्तुएँ उतनी ही साफ नजर आयेंगीं हृदय जितना साफ होगा हमें हमारा भविष्य स्वत: ही स्पष्ट नजर आने लगेगा।

वर्तमान के जीवन में ही आदमी के भूत का जीवन और भविष्य का जीवन स्पष्ट जाना जा सकता है। हमारे वर्तमान से भविष्यत् जीवन तो बनेगा ही- और भविष्य के भी कई जीवन बन सकते हैं, भाव ही भविष्य का निर्माता है। किसी ने एक मुहावरा लिखा है कि:- ''**जैसी गति वैसी मति**'' As condition of existance so mind. इसका मतलब यह है कि व्यक्ति को भविष्य में जैसी गति का बंध हो जाता है, व्यक्ति की मति भी वैसी ही हो जाती है जैसे किसी ने नरक गति का बंध कर लिया हो वह मरते समय अहंकार, क्रोध, घर संपत्ति में अधिक लगाव होने के कारण उसका त्याग

नहीं करेगा और अंत में भगवान का नाम भी नहीं लेगा। यदि कोई मरते समय उसके पास भगवान का नाम लेने लगे तो चिल्लाने लगेगा, रोने लगेगा अथवा स्वयं में कष्ट अनुभव करेगा। क्योंकि व्यक्ति की गति के अनुसार ही मति होती है।

इसे ही अब उल्टा करके देखें तो ''**जैसी मति वैसी गति**'' As mind so condition of existance. एक व्यक्ति अपना जीवन जन्म लेते ही प्रारम्भ कर देता है ये बात अलग है कि उसे 8 वर्ष बाद ही स्वयं के स्वरूप को समझने की क्षमता आ पाती है। इसके पूर्व वह अपने माता-पिता के संस्कारों पर चलता है। इससे यह स्पष्ट है कि हमें हरदम सँभलकर चलना है क्योंकि हमारे संस्कार से मति अच्छी होगी तो हमारी गति भी अच्छी होगी। हमारे मति की नींव पर हमारे भविष्य का महल खड़ा होता है और मति बनाने के लिए हमें सोचना भी पड़ता है और आचरण भी बनाना पड़ता है, इतना सबकुछ करने के बाद हमें अपने परिणाम को निर्मल भी करना पड़ता है, इतने साधन जुटाने पर मति अच्छी होने की संभावनाएँ पैदा होती हैं, अच्छी मति का अच्छा भविष्य होता है और कुमति ही भविष्य को कचरा बना देती है।

भाव ही भविष्य बनाता है, भावों को जिसने गहराई से समझना सीख लिया है जो स्वयं को पढ़ना जानता होगा वही दुनियाँ में होने वाले अदृश्य दृश्य के रहस्य को जान सकता है, पुस्तकों से पढ़ने वाले भविष्य को अनुमानिक तो बता सकते हैं, भविष्य वाणियाँ तो कर सकते हैं लेकिन उनके कितने कथन सही होते हैं, इसको हम सभी अच्छी तरह जानते हैं जब कभी घटनाएँ घट जाती हैं तब वे बातें भ्पहीसपहीज होने लगती हैं अन्यथा किसने वो बात कही, कब कही, कहाँ कही ? कोई अता-पता नहीं रहता है।

किसी ज्योतिषी ने इन्दरा गाँधी- राजीव गाँधी की मृत्यु की घोषणा की थी जब तक वे प्रधानमंत्री पद पर पदस्थ रहे तब तक किसी ने नहीं बताया कि ये घोषणा है लेकिन जब उनकी मृत्यु हो गई तो ज्योतिषी लोग श्रेय पाने के लिये ये कहने लगे कि हमने ये बहुत पहले ही बता दिया था कि प्रधानमंत्री के

साथ ऐसा होगा। सही बात तो ये है कि भविष्य, प्रकृति के गर्भ में छिपा हुआ एक अदृश्य नजारा है, आज जितने भी भविष्य वक्ता हैं ये सभी अपने-अपने अनुमान लगाते रहते हैं, पुस्तकों में कुछ चिह्न आदि को देखकर, किसी का भविष्य सचमुच नहीं बताया जा सकता है। यदि ये सड़क पर फुटपाथ पर बैठने वाले भविष्य वक्ता दूसरे का भविष्य चंद पैसों में बताते हैं तो अपना भविष्य ही क्यों नहीं जान लेते ? कितनी आश्चर्य की बात है कि भविष्य वक्ता अपना भविष्य नहीं जान पाते। मेरा यही कहना है जो अपना नहीं जान सकता वो किसी का भी नहीं जान सकता है।

भगवान ने पहले स्वयं को जाना तभी वो दूसरों को जानते हैं **''एगं जानाति सो सव्वं जानाति''** जो स्वयं को जानता है वह सबको जानता है। भविष्य को यदि सही रूप में दर्पणवत् देखते हुए कोई बता सकता है तो केवली भगवान बता सकते हैं, मन: पर्ययज्ञान के धारी और अवधिज्ञान के धारी मुनिराज बता सकते हैं इसके अलावा जितने भी लोग भविष्यवाणी करेंगे वो सभी अनुमान के आधार पर ही करेंगे सच हो, ये जरूरी नहीं ।

एक बार की बात है एक ज्योतिषी दिल्ली के राजघाट पर बैठा था तभी एक कुर्ता-पजामा टोपी पहिने एक व्यक्ति वहाँ से गुजरा ज्योतिषी ने सोचा कोई नेता होगा उसने उसे बुलाया और कहा आओ आपका भविष्यफल बता दें- उसने कहा कितने पैसे लोगे ? उसने कहा पचास रूपये दे देना उसकी जेब में एक भी रूपया नहीं था खाली जेब थी- उसने ज्योतिषी से कहा हमें नहीं दिखाना अपना हाथ- तब ज्योतिषी ने कहा- तुझे जो देना हो वही दे देना- और उसका हाथ पकड़कर बैठा लिया और लेंस से हाथ की रेखाओं को देखने लगा। थोड़ी देर देखने के बाद बोला- आप थोड़े ही दिन में एक अच्छे नेता बनने वाले हो, आपके पास अच्छा बंगला होगा, आपकी बहुत इज्जत होगी। ईश्वर ने चाहा तो आप मंत्री बन जाओगे।

आदमी की जेब में से पैसा निकालने का यही तरीका है कि आदमी के सामने झूंठी प्रशंसा कर दो थोड़ा अहंकार को पुष्ट करने वाला सम्मान कर

दो तो वह व्यक्ति लाखों रूपया आप पर लुटा सकता है, हमने देखा है कई बड़े लोगों को जिनकी साधु मंच से प्रशंसा कर देते हैं तो वे साधु के कहने पर सबकुछ करने को तैयार हो जाते हैं, उस व्यक्ति की प्रशंसा करने के बाद ज्योतिषी ने कहा– हमने आपका भविष्य बताया अब आप केवल दस रूपये ही दे दीजिये– उसकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी, केवल फकफके कपड़े पहने हुए था। वह बहुत देर तक उस ज्योतिषी की तरफ देखता रहा फिर बोला ज्योतिषी जी आप हमें एक बात तो बताएँ, कि आप हमारा भविष्य तो बता रहे हैं लेकिन आपको ये पता है कि हम आपको हाथ देखने के बदले में पैसे देंगे भी या नहीं– आपको ये पता था कि हमारी जेब में पैसा है भी या नहीं।

कहना यही है कि आज आदमी को खुद के भविष्य का पता नहीं और दूसरों के भविष्य को बताने के लिए तैयार बैठा है और आश्चर्य यह है कि ऐसे भौंदूवसंत लोगों को कई अपना भविष्य पूछने वाले बेवकूफ लोग भी बहुत मिल जाते हैं, किसी ने कहा कि मूर्खों की दुनिया में कमी नहीं है एक ढूँढो तो हजार मिलते हैं और हजार ढूँढो तो बेसुमार मिलते हैं यदि मूर्ख नहीं होते तो दुनियाँ इतनी बड़ी इतने दिनों से कैसे चलती ? मूर्खों की दम पर ही दुनियाँ चल रही है जैसे शराबियों की वजहसे ही शराब की दुकानें चल रहीं हैं जूते पहिनने वालों के कारण ही जूतों की फैक्ट्रियाँ व उनकी दुकानें चल रहीं हैं। मूर्खों की नगरी में कोई संत पुरुष का उपदेश सुनकर विवेकी हो जाता है वही व्यक्ति अपने भविष्य को जान सकता है।

आज यह बात सत्य है कि जितने भी ज्योतिषी जी रहें हैं वे सब उनके बल पर चल रहे हैं, जिन्हें स्वयं अपने भावों का पता नहीं है। संत पुरुष कभी भी ज्योतिषी की बात पर विश्वास नहीं करता है और न ही अपना हाथ ज्योतिषी को दिखाता है। वह जानता है कि मैं जो कुछ करूँगा मेरा भविष्य वही होगा और इंसान उसी का नाम है जो अपने हाथ की रेखाओं को बदल दे, वो इंसान नहीं जानवर है जो अपने हाथ की रेखाओं के अनुसार चले।

इसका मतलब समझ लें इंसान वही है जो लिखी किस्मत को पुरुषार्थ के बल पर बदल दे- शैतान की किस्मत को इंसान की किस्मत बना दे और इंसान की किस्मत को भगवान की किस्मत बना दे और जो किस्मत को ही भोगता रहे वो जानवर है क्योंकि जानवर अपनी किस्मत को बदलने में इंसान की तरह सक्षम नहीं है।

कर्म की रेख में भी मेख बुधजन मार सकते हैं।

करम क्या चीज है? उसको भी वो संहार सकते हैं।।

वो आदमी है कहाँ? जो जी रहा किस्मत के भरोसे पर।

पुराने पर्चे किस्मत के यहाँ वो फाड़ सकते हैं।।

आज के ज्योतिषी कुण्डली देखकर भविष्य बताते हैं, किताबों में जो लिखा है अच्छा या बुरा दोनों तरह के बताते हैं, जब यह बात गलत सिद्ध हो जाती है तो कहने लगते हैं गुरु पर शनि की दृष्टि पड़ रही थी, बुध पर राहु खड़ा हुआ था, मंगल पर केतु की कुदृष्टि थी..... आदि-आदि बातें कहकर अपनी बात को पुष्ट करने लगते हैं। हमने जब ज्योतिष को पढ़ा तो अंत में निचोड़ यही निकाला कि जो कर्म सिद्धान्त को जानता हो उसे ज्योतिष वास्तु शास्त्र में विश्वासकम करना चाहिए। इसका मतलब ये भी नहीं की ज्योतिष या वास्तुशास्त्र गलत हैं। कहने का मतलब यह है कि आज न ऐसा ज्योतिष है न ऐसे ज्योतिषी जो भविष्य को दर्पणवत् देखकर किसी को बता सकें।

कर्म सिद्धान्त समुद्र की तरह है, सूरज की तरह है जो परम सत्य है इसमें झूठ की कहीं भी संभावना नहीं है, अकाट्य सत्य है जिसे हर व्यक्ति, हर संत और हर सम्प्रदाय वाला स्वीकार करेगा। ज्योतिषी को कोई स्वीकार करे या नहीं करे क्योंकि ज्योतिष की बात को, अनुमान की बात को कर्म सिद्धान्त काट सकता है। कर्म वह चीज है जो हमारे द्वारा निर्मित हुआ है और उसको भोगने वाले सिर्फ हम ही हैं, इसलिए हमारे कर्म का अधिकार सिर्फ हम पर ही बनता है, दूसरों पर नहीं अनुमान दूसरों द्वारा लगाया जाता है और

दूसरों की वस्तु के बारे में होता है।

कुछ लोग कहते हैं कि **''अंत भला तो सब भला''** A good way has a good end. अंत भला का मतलब है कुण्डली देखने के बाद अंतिम फलादेश की घोषणा। अंत भला उसी का है जिसका सारा जीवन भलाई में गुजरा है, जिसने जन्म से अंत तक सज्जनता को नहीं छोड़ा है, जिसने जीवन में आवश्यकता से अधिक तृष्णा की पुष्टि के लिए परिग्रह को नहीं जोड़ा है, जो दूसरों के हित के लिए अपने धनादि का प्रयोग करता है, जिसने परमात्मा को अपना जीवन सौंप दिया है उसका अंत में भला होना संभव है। लेकिन जो अपने बच्चों की इच्छापूर्ति में ही लगा रहा, पत्नि के साथ भोगादि में ही लगा रहा, जिसने कभी परमात्मा की आराधना नहीं की- संयम नियम से रहना नहीं सीखा, संतों की सेवा नहीं की उनका सत्संग नहीं किया ऐसे लोगों का अंत भला कभी नहीं हो सकता है।

कोई चाहे कि हम 70 वर्ष की उम्र में 65 वर्ष गृहस्थ में रहेंगे फिर 5 वर्ष में सत्संग करके साधु बनके अंत में भला कर लेंगे ये व्यक्ति मायाचारी कर रहा है। कहने से किसी का अंत में भला नहीं हो सकता, कोई ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो पूरे जीवनकाल में गृहस्थ रहते हैं और अंत समय में सत्संग करके जीवन को सार्थक बना लेते हैं- ध्यान रहे ये वे व्यक्ति हैं जो गृहस्थ अवस्था में रहे लेकिन सादगी से नियम संयम पूर्वक जिये, घर के झंझट से हमेशा अलिप्त रहे, जिनके अन्दर तप-त्याग की दानादि की भावना निरंतर बनी ही रही हो ऐसे लोग अंत समय में अपना भला कर लेते हैं।

सागर की बात है एक बूढ़े व्यक्ति जिनकी उम्र 84 वर्ष के करीब थी उस समय आचार्यश्री वहीं पर विद्यमान थे। उनकी तबियत थोड़ी सी खराब हुई तो वे उन्हें आचार्यश्री के पास ले आये, वो आते ही रोने लगे बाद में आचार्यश्री ने उन्हें सम्बोधन दिया और व्रती बनने को कहा- तो वे सहर्ष ही दीक्षा लेने को तैयार हो गये, अंत में क्षुल्लक दीक्षा लेकर तीसरे दिन समाधि हो गई ये अंत भला कर गये।

गुना की बात है मेरा वर्षायोग हो रहा था और श्री भक्तामर स्तोत्र का शिविर चल रहा था तभी एक घटना घटी- एक महिला रोती हुई शिविर में आई हमने पूछा क्या हो गया ? उसने कहा मेरे ससुर जी जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान हैं उनकी तबियत खराब हो गई है- हम तत्काल शिविर में से उठकर चल दिये वहाँ देखा तो तबियत काबू में थी, हम उस माहौल से उन्हें अपने कमरे में ले आये और शाम को उन्हें दीक्षा दी, दीक्षा लेकर उन्होंने सबकुछ त्याग कर दिया, रातभर उन्हें देखते रहे, धर्मोपदेश सुनाते रहे, सचेत करते रहे, प्रातः 8:30 बजे पर उन्होंने समाधि मरण कर देवलोक प्राप्त कर लिया, इनका सारा जीवन भलाई से ओत-प्रोत था, इसलिए अंत में भला हो सका।

अंत भला होना ही इस बात का प्रतीक है कि इसकी जिंदगी भलाई में गुजरी थी। जब हम चिट्ठा बनाते हैं उसमें यदि अंतिम Balance अच्छे position में होता है तो यह बात साफ हो जाती है कि इसका Trading Account भी बहुत अच्छा था उसमें Gross profit and Net profit भी अच्छी थी और उसके बाद इसका Profit & Loss Account भी बहुत Fine था। अन्यथा Balance Sheet अच्छी हो ही नहीं सकती थी। ठीक वैसे ही हमारे जीवन भर के व्यवहार से भरा व्यापार जिसमें बुराई कम अच्छाई अधिक हो तभी अंत भला हो सकता है।

जिसने अपने जीवन को परमात्मा के लिए सौंप दिया है, उसके बताए अनुसार जो चलता है। उसी के कहे अनुसार खाता-पीता है, रहता है, यदि खाने को मिल गया तो परमात्मा का ध्यान करता है, यदि नहीं मिला तो परमात्मा को धन्यवाद देता है, आज का दिन साधना और तप के लिए है जो ऐसा सोचता है उसकी देखरेख भी परमात्मा करता है वह कहीं भी जाये दुखी नहीं रहता है। उसे लोग समय पर उचित अच्छा भोजन देते हैं, उसके रहने की व्यवस्था करते हैं, उसके आशीष से दुनियाँ के सभी काम बनते हैं, ऐसा संत पुरुष हमेशा लोगों को भलाई का मार्ग ही दिखाता है और भला करता रहता है कोई उसका बुरा भी करे तो भी वह उसका भला ही चाहता है, ऐसे महापुरुष

संतों का अंत में भला सुनिश्चित है।

दुनियाँ का अटल नियम है:-

कर भला, होगा भला, नेकी का बदला नेक है।

प्रेम कर दिल से सभी को, जीव सबका एक है।।

यदि किसी को तुमने भलाई के भाव से ज्ञान दिया है तो भविष्य में आपका ज्ञान दिन दूना रात चौगुना होता चला जायेगा। यदि तुमने किसी को मानसिक संताप दिया है तो भविष्य में आपके ऊपर भी मानसिक संकट रहेगा। आज कुछ लोग अंत समय में कोमा में चले जाते हैं, जीवन भर घर में खूब धर्म करता रहा और अंत समय में भविष्य कोमा में चला गया इसका कारण यह है कि इसने लोगों को खूब मानसिक संताप दिया था, मानसिक संताप के सद्‌भाव में व्यक्ति का न कुछ करने में मन लगाथा न धर्म में मन लगा पाया था, उसकी स्थिति शून्य की तरह पागल सी हो गई थी। उसी का परिणाम है आज ऐसे व्यक्ति का भविष्य कोमा में जाकर अंतिम रूप ले लेता है।

हर आदमी के अन्दर ऐसा भाव छिपा बैठा हुआ है कि हम भविष्य के ज्ञाता हो जावें सभी का भविष्य हमें मालूम हो जावे और कई लोग तो अपनी धाक जमाने के लिए, चार लोगों में अपनी इमेज बनाने के लिए न जानते हुए भी थोड़ी सी इधर-उधर की किताबें पढ़कर बताने लगते हैं तब भविष्य वक्ता एवं सुनने वाले दोनों की बहुत हँसी होती है, एक बार की बात है:-

एक वकील साहब ने एक माने हुए प्रतिष्ठित ज्योतिषी से अपने भविष्यफल के बारे में पूछा- तो ज्योतिषी ने कहा दो हजार रुपये लगेंगे- वकील साहब ने 500/- रुपये देने को कहा इस पर ज्योतिषी बिगड़ा और बोला मैं एक पाई भी कम नहीं लूँगा, वकील साहब 600-700/- रुपये कहते रहे तो ज्योतिषी 1500/- रुपये पर तैयार हो गया वकील साहब

1000/- रुपये तक तो ज्योतिषी 1200/- रुपये तक आ गया अंततः वकील 1 हजार तक ही अड़ा रहा अंत में ज्योतिषी को गुस्सा भी आ गया और फोन पर ही बोला तेरी रविवार को दाहिनी टाँग ठीक 10:20 बजे टूट जायेगी।

वकील साहब ने जैसे ही सुना तो घबराया और बोला मैं 1200/- रुपये नहीं 1500/- रुपये दे दूँगा, लेकिन मेरा भविष्य बदल दो। ज्योतिषी बोला कह दिया सो कह दिया- अब तू चाहे 5000/- रुपये दे तब भी मैं अपना कथन नहीं बदलूँगा। वकील को यह बात अच्छी तरह पता थी कि ये जो कुछ भी कहता है वह अवश्य होता है अभी तक भविष्य वाणियों में एक भी कथन इसका गलत नहीं हुआ है। फिर यह कैसे गलत हो सकता है? वकील को रविवार की दहशत बैठी हुई थी वह सोच रहा था कि रविवार ज्योतिषी के साथ ही बिताया जाये तो अच्छा रहेगा।

यह सोचकर वकील ने अपनी कार गैरेज से निकलवाई और कार के पीछे सुरक्षित बैठकर ड्राईवर से गाड़ी चलाने को कहा- 10 बज रहे थे वो चल दिये 15-20 मिनिट बाद कार एक व्यस्ततम चौराहे से गुजर रही थी, अचानक एक मोटर साईकिल तेजी से 60 की स्पीड से आई और एक कार में जोरदार टक्कर मारी उस समय घड़ी पर नजर डाली तो घड़ी में 10:20 बजे का समय हुआ था। वकील साहब घबराये ज्योतिषी की बात याद आ गई और अपने पाँव को देखने लगे, बार-बार हाथ फेरने लगे फिर अचानक रविवार को अशुभ दिन समझ कर घर लौट आये।

दूसरे दिन वकील साहब ज्योतिषी के घर गये वहाँ ज्योतिषी को देखकर अवाक् रह गये और बोले अरे ये आपकी दाँयी टाँग कैसे टूटी ? क्या हुआ ? ज्योतिषी सिर पकड़कर रोने लगा- वकील साहब को ये सब माजरा समझ में नहीं आया और फिर आश्चर्य मुद्रा में पूछा ये कैसे हुआ आपको? ज्योतिषी बोला- क्या बताऊँ वकील साहब जिस समय मैं आपको यह बात बता रहा था कि आपकी टाँग रविवार को 10:20 बजे टूट जायेगी उस समय

मैं अपनी ही कुण्डली देख रहा था।

भविष्य को बदला भी जा सकता है और नहीं भी। यदि हमसे भगवान की अवेहलना, गुरुओं की निंदा- अनादर या शास्त्रों का अवर्णवाद हुआ है तो इस कर्म से जो भविष्य बना है, उसको बदलने में कोई भी सक्षम नहीं भगवान आदिनाथ को भी इसका फल भोगना पड़ा था- सही बात है परमात्मा- महात्मा और शास्त्र के अनादर से उत्पन्न कर्म को कहीं भी नहीं बदला जा सकता है। यदि कोई गुनाह मित्र से, व्यापार या घर गृहस्थी में हो गया है तो उसे परमात्मा और महात्मा के चरणों में बदला जा सकता है।

भविष्य को बदलने के लिए जीवंत पुरुषार्थ जरूरी है, पुरुषार्थ भविष्य को बदल भी सकता है और भविष्य की सत्ता को मिटा भी सकता है। पुरुषार्थ में दोनों शक्तियाँ है। जो साँप को मार सकता है वह साँप को टोकरे में बंद करके दबा भी सकता है। मारने वाले के पास दोनों ही शक्तियाँ हैं।

हम भविष्य के निर्माता भी हैं, भविष्य के ज्ञाता भी हैं, भविष्य को बदल भी सकते हैं और भविष्य को मिटा भी सकते हैं। चयन हमारे भावों पर आधारित है। हमारे भाव कमजोर हैं तो भविष्य कमजोर बनता है, यदि हम सूक्ष्मज्ञानी हैं तो भविष्य जानते हैं, थोड़े पुरुषार्थी हैं तो भविष्य बदलते हैं और हमारे स्वयं में विलीन होने पर भविष्य मिटते हैं। भोगों में भविष्य हीन, योगों में भविष्य ग्रीन और अयोगों में भविष्य क्लीन (Clean) होता है। भविष्य गंदाबनाए वो जानवर, तो भविष्य उज्ज्वल बनाए वो इंसान और जो भविष्य की सत्ता ही मिटाए वह कोई महापुरूष होता है।

सच में अपना भविष्य जानना बहुत सरल है, दूसरे का जानना कठिन है। झूठ में दूसरे का बताना सरल है लेकिन खुद का बताना बहुत कठिन है आओ कुंदकुंद भगवान के अनुसार और हमारे तुच्छ चिंतन से

अपना भविष्य जानें और अपने हाथसे निकालकर अपना भविष्य सुधारें। आचार्य कुंदकुंद ने लिखा है:–

पावेण णरय तिरियं, धम्मेण गमइ देव लोयम्मि।

मिस्सस्स माणुसत्तं, दोण्हं पि खवेण मोक्खं तु।।

पाप से नरक व तिर्यंच गति, धर्म से देव गति में गमन होता है व पाप–पुण्य की मिश्र अवस्था में मनुष्य गति में गमन होता है और दोनों के क्षय होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पाप से नरक व तिर्यंच गति, धर्म से देव गति में गमन होता है व पाप–पुण्य की मिश्र अवस्था में मनुष्य गति में गमन होता है और दोनों के क्षय होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पाप दो गतियों में ले जाने वाला है और धर्म केवल एक गति में ले जाता है, जबकि पाप–पुण्य की मिश्र अवस्था मनुष्य गति को ले जाती है इसका Distrubution करते हैं:–

10 प्रतिशत पुण्य	90 प्रतिशत पाप	=	नरकगति
50 प्रतिशत पुण्य	50 प्रतिशत पाप	=	मनुष्यगति
75 प्रतिशत पाप	25 प्रतिशत पुण्य	=	तिर्यचगति
90 प्रतिशत पुण्य	10 प्रतिशत पाप	=	देवगति
00 प्रतिशत पुण्य	00 प्रतिशत पाप	=	मोक्ष

अब इसे ही घण्टों में स्पष्ट करते हैं।

21.36 घंटे पाप	2.24 घण्टे पुण्य	=	नरकगति
12 घंटे पाप	12 घंटे पुण्य	=	मनुष्यगति
18 घंटे पाप	6 घंटे पुण्य	=	तिर्यचगति
21.36 घंटे पुण्य	2.24 घंटे पाप	=	देवगति

इन सूत्रों के आधार पर भविष्य में कौन सी गति को प्राप्त होंगे यह जानना बहुत ही सरल हो जाता है। सर्वप्रथम हम अपनी उम्र को वर्षो से माह में, माह से दिनों में और दिनों से घंटों में निकाल लें, तत्पश्चात् अपने जीवन में कितना समय अच्छे विचारों में गुजरा है अथवा एक दिन में कितने घंटे धर्म के कार्यो में लगे हैं ऐसा निकालकर जितने घंटे निकलें उसका उम्र के दिनों में गुणा कर दें फिर उनका प्रतिशत निकाल लें प्रतिशत निकालकर दूसरी Condition का भी प्रतिशत निकाल लें, दोनों प्रतिशत निकाल लेने के बाद हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि हमारा भविष्य में किस गति में गमन होगा। हमारा अंत गति के निर्धारण पर ही निर्भर करेगा अंत समय में गति के अनुसार ही हमारी मति हो जायेगी।

यदि हमारे जीवन के खाते में 50 प्रतिशत पाप यानि 12 घंटे पाप होगा 12 घंटे पुण्य की ब्वदकपजपवद होगी तो यह पूर्णतः सच है कि इस समय वह व्यक्ति मरे तो उस व्यक्ति को भविष्य में पुरुष (मनुष्य) गति मिलेगी यदि 50 प्रतिशत पुण्य की बजाय 60 प्रतिशत पुण्य होगा तो Human Condition में धनाढ्य खानदान में जन्म होगा सभी प्रकार की सुख सुविधायें जन्म से ही उपलब्ध होंगी यदि 70 प्रतिशत पुण्य पर पहुँचता है तो फिर किसी राजा-महाराज के यहाँ पूरे नगर या देश पर राज्य करने वाला होता है।

यदि हमारे पुण्य की मात्रा 20 प्रतिशत है यानि 4 घंटे 48 मिनिट है तो निश्चत होगा कि इसे भविष्य में तिर्यंच गति में जाना है, यदि 15 प्रतिशत हो जाये तो भी तिर्यंच गति में जाना है और यदि 25-30 प्रतिशत हो जाये तो भी Sub-human Condition में जाना है। अंतर इतना ही है कि 25-30 प्रतिशत पर वह कुत्ता तो बनेगा लेकिन सुन्दर पालतू सुख-सुविधाओं से युक्त होगा क्योंकि कुत्ते भी दो तरह के होते हैं, एक पालतू दूसरे फालतू, फालतू गली-गली भूखों मरते, मलभक्षण करते दर-दर की ठोकरें खाते हैं और बुरी मौत मरते हैं लेकिन पालतू कुत्तों की कीमत होती है वे अच्छे घरों में

रहते हैं उनके खाने–पीने की, रहने की, नहाने–धोने की व्यवस्था आदमी को करनी पड़ती है, उसे देखकर लोगों को भी अच्छा लगता है। जो फालतू होते हैं वे बिना पट्टे वाले होते हैं जो पालतू होते हैं उनके गले में पट्टा होता है, ठीक वैसे ही जो आदमी देव–शास्त्र–गुरु, परमात्मा और महात्मा का आदर सत्कार करते हुए उनकी अवज्ञा नहीं करता उसके गले में परमात्मा द्वारा सम्यग्दर्शन का पट्टा डाल दिया जाता है, फिर उसको सभी लोग इज्जत की दृष्टि से देखते हैं ऐसे लोग सभी को शोभनीय प्रतीत होते हैं, उनका हर घर में, नगर में, देश में, परदेश में, इसभव में, परभव में सब जगह सम्मान होता है। लेकिन जिसके गले में परमात्मा व महात्मा के आदर सत्कार का पट्टा नहीं होता वे आदमी फालतू होते हैं, जिसे परमात्मा और महात्मा नहीं देखता उसको दुनियाँ में कोई नहीं देखता। वह आदमी दर–दर की ठोकरें खाता हुआ कहीं नारकी बनता है, कहीं जानवर बनता है, कहीं देवगति में जाये तो राक्षस भूत व्यंतर बनता है, भटकती आत्मा की तरह और कहीं मनुष्य भी बन जाये तो सारी दुनियाँ से निंदनीय पद धोबी–जमादार आदि बनता है अथवा स्त्री बने तो नीच जाति की वेश्या अथवा नपुंसक (हिंजड़ा) बनता है।

यदि किसी का पुण्य 80 प्रतिशत रहा तो वह देव तो बनता है लेकिन एक देवेन्द्र होते हैं जो सभी देवों पर शासन करते हैं, एक देव वो होते हैं, जो नौकर की तरह देवों के घर में काम करते हैं। सूर्य को खींचने वाले चन्द्रमा को खींचने वाले 16000 देवों की Condition गधों जैसी ही नहीं उनसे भी बदतर होती है, इन देवों को 24 घंटे में एक सैकेण्ड भी आराम नहीं है गधा तो रात को सो भी लेता है खा–पी भी लेता है, मिट्टी में लोट भी लेता है लेकिन इन आभियोग्य नामक देवों को रंच मात्र आराम नहीं है। कहने के लिए ये देव हैं लेकिन इनकी जिंदगी जानवरों से भी बदतर है। यह पुण्य की कमी के कारण ही है।

यदि किसी का 10 प्रतिशत पुण्य रहता है तो नरकगति निश्चित होती है लेकिन किसी का पुण्य 5 प्रतिशत ही रह जाये, किसी का पुण्य 24

घंटे में 1 घंटे ही हो तब ऐसी स्थिति में गहरा नरक हो जाता है और जिसके जीवन में 1 घंटे भी पुण्य नहीं है जो मात्र मंदिर जाकर 10 मिनिट में ही एक जाप या कुछ पढ़कर के भाग आता है तो ऐसी व्यक्ति का और गहरा नरक है, सबसे गहरा नरक उसी के लिए प्रकृति ने बनाया है। सबसे गहरे नरक में दो तरह के लोग जाते हैं या तो वह जिसके पास बहुत पैसा है और अंत समय में वह त्याग करके नहीं मरता है, दूसरा वह जिसके पास किसी को मारने की शक्ति नहीं और उसे मारने का विचार करता रहता है। मेरे पास बहुत सारा धन वैभव हो ऐसा सोचते-सोचते जो मरता है लेकिन जो त्याग करके मरते हैं वे स्वर्ग व मोक्ष के पात्र होते हैं। उनका भविष्य स्वर्ग है या मोक्ष।

महर्षियों ने कहा भी है कि:- ''राजेश्वरी सो नरकेश्वरी और तपेश्वरी सो स्वर्गेश्वरी'' राज्य सम्पदा में मरने वालों का भविष्य नरक होता है जैसे रावण का और तप त्याग करने वालों का भविष्य स्वर्ग या मोक्ष होता है, जैसे- भगवानमहावीर का, राम का, हनुमान का।

भविष्य जानने के और भी तरीके

1. यदि आपके नगर में कहीं सच्चे गुरु दिखाई दे जायें (जिनके पास जरा सा भी परिग्रह न हो, हमेशा ज्ञान ध्यान में लगे रहते हों) उनको आपने भक्तिपूर्वक आहार देकर उनकी सेवा की है तो समझना कि अभी तुम्हें नरक गति और तिर्यंच गति का बंध नहीं हुआ है क्योंकि जिनके भविष्य में इन दोनों कुगतियों का अनुबंध हो जाता है वे दिगम्बर संतो की सेवा नहीं कर पाते हैं और न ही भगवान की सच्चे भावों से पूजा कर पाते हैं।

2. यदि आपके मन में संतों के चरणों में बैठकर संयम-व्रत लेने के भाव होने लगें अथवा आप व्रती हो जायें तो समझना चाहिए कि आपका

भविष्य बहुत अच्छा है आपको स्वर्ग में देवगति भविष्य में मिलने वाली है क्योंकि जो व्रती होते हैं वे भविष्य में देवगति को ही प्राप्त करते हैं वे मनुष्य, नारकी या तिर्यंच नहीं होते हैं।

3. यदि आप अपने जीवन में नियम संयम पूर्वक परमात्मा- महात्मा के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हुए कोमल परिणाम रखते हैं, मधुर व्यवहार रखते हैं, आस्था रखते हुए पूजन आदि करते हैं तो आपका भविष्य स्वर्ग में देव पर्याय को प्राप्त होगा।

4. यदि आप गृहस्थ हैं ऐसी अवस्था में आपका परिवार है, उस परिवार में रहते हुए, धन, मकान, पत्नि, बच्चे-बच्ची, सोना, चाँदी, कपड़े आदिको अपनी आवश्यकता के अनुसार रखते हैं ज्यादा परिग्रह के रूप में नहीं रखते Limit में रहते हैं और कम से कम वस्तुओं में अपना जीवनयापन करने के लिए संकल्पित हैं तो समझना आप भविष्य में एक अच्छे सुयोग्य धनाढ्य इंसान बनेंगे।

5. यदि आप धन कमाने में अथवा घर परिवार में लोक व्यवहार में लोगों के साथ धोखाधड़ी करते हैं, कहते हैं कुछ और करते हैं कुछ और। छल-कपट आपकी व्यावहारिक चर्या है तो आप भविष्य में जानवरों की ब्वदकपजपवद को प्राप्त होंगें

6. यदि आपसे अच्छा किसी ने काम किया है जैसे कोई आपसे अधिक ज्ञानवान है, आचरणवान है अथवा परमात्मा महात्मा पर अधिक श्रद्धावान है, आपसे ज्यादा धार्मिक है, आपसे ज्यादा गुणज्ञ है और उसकी आप प्रशंसा न करके आलोचना और निंदा करते हैं और अपने अवगुणों की भी प्रशंसा करते हैं तो आप भविष्य में जानवर होंगे या नारकी। यदि ये न हुए तो आदमी होंगे वह भी जानवरों जैसी प्रवृत्ति वाले होंगे।

7. यदि आप धन मकान-पत्नी-बच्चे, सोना, चाँदी, वस्त्रादि में किसी भी प्रकार का कोई प्रमाण नहीं रखते हैं तो इसका मतलब साफ है कि

आप सारी दुनियाँ के धन को पाने की इच्छा रखते हैं तो फिर आपका भविष्य नरक गति के अलावा दूसरा हो ही नहीं सकता है।

8. यदि आप पाँचों इन्द्रियों के भोग में इस कदर मस्त हैं कि धर्म-कर्म कुछ जानते ही नहीं हैं और भोगते-भोगते ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं, तो समझना चाहिए कि आपका भविष्य आलू, गाजर, मूली में रहने वाले निगोदिया जीवों में जन्म वाला होगा।

9. यदि आपने कषायवश किसी व्यक्ति के या किसी जानवर के डण्डा आदि मार दिया या पटक दिया जिससे उसके हाथ-पैर टूट गये वह जीवन भर अपाहिज रहा तो आपको भविष्य में हाथ-पाँव में लकवा होगा और यह जब भी हो युवावस्था में या बुढ़ापे में लेकिन मृत्यु तक रहेगा।

10. यदि आप प्रतिदिन पूजा पाठ करते हैं, उपवास करते हैं, आप व्रती हैं और घर में कलह बहुत करते हैं चिड़चिड़ाते रहते हैं बड़े होने के कारण सभी पर चिल्लाते रहते हैं तो आप भविष्य में व्यंतर जाति के देव बनेंगे।

11. यदि आप बहुत बड़े धर्मात्मा हैं व्रती हैं या साधु हैं और आप इधर की बात उधर, उधर की बात इधर कहकर दोनों तरफ झगड़ा, कलह कराकर अपने आप में खुश होते हैं तो आप भविष्य में भवनवासी देवों में असुर कुमार के देव बनेंगे।

12. जो धर्मात्मा या साधु होकर हिंजड़े की तरह तालियाँ बजाता है, भद्दी भाषा बोलता है, भद्दे हाव-भाव करता है, ढोलक बजाता है, नचता है तो ऐसे व्यक्ति भविष्य में व्यंतर जाति के देवों में किन्नर होते हैं।

13. जो धर्मात्मा या साधु अपने कार्य का बोझ दूसरों पर क्षमता से ज्यादा लाद देता है, दूसरों पर दयाभाव नहीं रखता और अपना काम स्वयं करने योग्य होने पर भी दूसरों से करवाता है वह भविष्य में आभियोग्य नामक जानवर जैसा देव होता है।

14. जो धर्मात्मा होकर साधु होकर भी मायाचारी छलकपट की भावना से अपने कर्तव्य को करता है वह धर्म के बल पर देवगति तो पाता है(लेकिन देवी बनता है।

15. जो धर्मी बनकर उत्कृष्ट तप त्याग करता हुआ राग-द्वेष से रहित वीतरागी होता है वह भविष्य में इन्द्र पद को प्राप्त होता है।

ऐसे लक्षणों से भविष्य निश्चित

यदि आप चार भाई बहिन होकर आपस में प्रेम से एक साथ बैठकर खा-पी नहीं सकते, प्रेम से रह नहीं सकते, अपने माँ-बाप की सेवा सुश्रुषा नहीं कर सकते अथवा एक-दूसरे भाई को देखकर कुत्तों की तरह लड़ते हो, माता-पिता बड़ों का अनादर करते हो या आप दुनियाँ की सारी दौलत पाने की इच्छा रखते हो, तो आप भविष्य के नारकी हो या आपका भविष्य दुर्गति नरक है।

यदि आप कम से कम वस्तुओं को अपने पास रखकर जीवन-यापन करते हो, आपके हृदय का परिणाम अत्यन्त कोमल है, आप सभी से निभना-निभाना जानते हो, आपस में सामंजस्य बिठाकर प्रेम से रहते हो, स्वभाव से ही मृदुपरिणामी हो तो आप भविष्य में इंसान बनेंगे।

यदि आप अपना भी उपकार करते हो और परोपकार में भी लगे रहते हो, कभी किसी को भी वचनों से या मन से पीड़ा न देते हो ओर न ही बुरा सोचते हो तो आप भविष्य में देव बनने के योग्य हो।

यदि आप धन जायदाद एकत्रित करने में लगे हो, उससे तृप्त नहीं हो पा रहे हो, उसे खर्च करने में, सदुपयोग करने में मन तत्पर नहीं रहता है, दान की प्रवृत्ति आपके अन्दर नहीं है, कंजूस स्वभाव के हैं, न खुद ही खा सकते

हैं न गैरों को खिलाते हैं ऐसी अवस्था में आप भविष्य में साँप होंगे अथवा कोई अन्य जानवर की पर्याय में पैदा होंगे।

स्वर्ग व नरक सब यहीं

आज कई पढ़े लिखे लोग भी यह बात बहुत ही सरलता से कह जाते हैं कि न स्वर्ग ऊपर है न नर्क नीचे है, स्वर्ग और नरक इस जमीन पर ही हैं। परमात्मा की वाणी से अनभिज्ञ, संतों की वाणी में नास्तिक और दुनियाँ के चक्र से बे-फिक्र ऐसे अज्ञानी लोगों को यह नहीं पता है कि सात नरक हैं और उनमें 84 लाख बिल हैं जैसे सात बड़े-बड़े अस्पताल हैं, उनमें 84 लाख कमरे हैं, जिन कमरों में दु:खी मरीज रहते हैं और सोलह स्वर्ग हैं जिनमें 84 लाख 97 हजार 23 उत्पत्ति स्थान वाली शैय्या हैं। ये सब होते हुए भी हम सिद्ध यह करना चाहते हैं कि स्वर्ग व नरक यहीं है:-

यह बात जग विख्यात है कि इस कर्मभूमि में आदमी को पहिले काम करना पड़ता है फिर उसे परिश्रम का फल मिलता है, सरकार का या व्यापार का भी यही नियम है एक माह काम करो उसके बाद एक तारीख को वेतन प्राप्त करो। यदि जीवन भर तक अच्छा कार्य करते हैं, जमीन पर देवता बनकर जीते हैं। दान, प्रभुसेवा में तत्पर रहते हैं तो देवगति पूरे जीवन के बाद ही मिलेगी। कोई बुरा कृत्य, चोरी, डकैती आदि किये हैं तो परिणाम तो इस जीवन के बाद ही मिलेगा या यहीं पर मिल जायेगा। कभी-कभी कोई गलत कार्य या अच्छे कार्य करता है और तत्काल ही उसके साथ अच्छी या बुरी घटना घट जाती है तब लोग कहने लगते हैं कि यहाँ का फल यहीं मिल जाता है, सही बात तो यह है कि आज कोई कार्य द्धअच्छा या बुराऋ किया है, उसका फल यदि अभी मिलेगा तो कम से कम 48 मिनिट बाद मिलेगा इसके पहिले फल मिलने की कोई गुंजाइश नहीं है, इसके बाद कई दिन बाद भी

फल प्राप्त हो सकता है, एक माह बाद, एक वर्ष बाद, सौ वर्ष बाद, हजार वर्ष बाद आदि।

इन बातों से यह स्पष्ट है कि आज जो किया है उसका फल आज भी मिल सकता है, थोड़े दिन बाद भी और एक जन्म या कई जन्म बाद भी मिल सकता है। सभी प्रकार की बातें सही हो सकती हैं।

समझने की बात यह है कि जब कोई व्यक्ति नारकी की तरह मारने-काटने-अग्नि में डालकर जलाने, हत्या करने, शरीर के टुकड़े करने, कुत्तों की तरह लड़ने, घर में कलह करने जैसा कार्य करता है तो उसे ऐसे कार्य करते समय बिल्कुल नारकियों जैसे परिणाम बनाने पड़ते हैं, वैसा ही नीच व्यवहार करना पड़ता है और वैसा ही वह अनुभव भी करता है, जब वैसा ही अनुभव होने लगे तो वह ऐसा कहने लगता है कि नर्क यहीं है। ठीक इसके विपरीत कोई व्यक्ति धर्म-कर्म करता रहता है, शांत प्रकृति का है, सभी पर दयाभाव रखता है, हमेशा दूसरों की सहायता करता रहता है, सद्मार्ग बताकर सदुपदेश देता रहता है। अपना जीवन नियम संयम से व्यतीत करता है, सबकुछ प्राप्त होते हुए भी वस्तु के भोगोपभोग में आसक्ति नहीं रखता है सभी से अच्छा मिलनसार व्यवहार करता है तो उस व्यक्ति को सभी लोग देवता कहने लगते हैं यद्यपि ऐसे लोगों को देवता इसलिये भी कहते हैं क्योंकि भविष्य में देव बनना है और भविष्य में देव वही बनता है जो अभी जीते जी यहीं पर देव बन गया है जो यहाँ पर देव न बन सका वो मरकर कभी भी देव न बना है न बन सकता है, न बनेगा भले ही हम करने के बाद उसके आगे स्वर्गवासी या स्वर्गीय लिख दें।

जिनकी वासनाएँ गुप्त न होकर जानवरों की तरह खुले आम प्रकट होने लगती हैं, जिन्हें इज्जत, शर्म से कोई मतलब नहीं है, जो अपने ही मित्रों में छल-कपट, धोखाधड़ी करते हैं, भोजन में भाई-भाई लड़ते हैं, एक-दूसरे को देखकर ईर्ष्या-द्वेष कषाय अहंकार उत्पन्न हो जाते हैं, ऐसे लोगों का

जीवन यहाँ जानवरों के तुल्य है ऐसे लोगों को जानवर कह दिया जाता(लेकिन कई लोग इंसानियत की इज्जत करते हैं और मनुष्य के योग्य कार्य करते हैं उन्हें महसूस होता है कि हमारा मनुष्य होना सार्थक है। बड़ों का सम्मान और छोटों को प्रेम वात्सल्य देते हैं तो कई लोग उन्हें अच्छा इंसान कहने लगते हैं।

इन क्रियाओं के आधार पर यही लगता है कि हम जैसा वेदन करते हैं, जैसा व्यवहार करते हैं, उसके अनुसार भविष्य बनता है और उसी के अनुसार इस दुनियाँ में नामकरण हो जाता है। फिर स्वर्ग या नरक हमें यही दिखाई देता है इस अपेक्षा से स्वर्ग और नरक सब यहीं है।

भविष्य बदलने की कला

हम अपना भविष्य सूत्रों के आधार से निकालें और हमारा भविष्य कहीं 10 प्रतिशत पुण्य 90 प्रतिशत पाप का निकल आये तब हमारा भविष्य नरक गति का होगा यह फायनल हो जायेगा ऐसी स्थिति में घबराहट होना स्वाभाविक है और घबराहट स्वाभाविक तब होगी जब तुम्हें देव-शास्त्र-गुरुओं की बात पर पूर्ण श्रद्धान् होगा यदि श्रद्धान ही नहीं होगा तो इस पुस्तक को पढ़कर और अपना भविष्य निकालकर भी तुम यही सोचोगे कि ये तो सब फिजूल की बातें हैं, साधु तो कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं, कुछ न कहेंगे तो साधु दिन-भर क्या करेंगे ? कितने आश्चर्य की बात है कि हम ये भी समझते हैं कि साधु कुछ न कुछ कहते ही रहते हैं ये भी जानते है कि साधु फालतू में अन्यथा वचन नहीं बोलते हैं हम साधु की बात को गहनता से जीवन संबंधी नहीं समझते हैं और उसकी सुनना भी पसंद करते हैं यदि भविष्य बदलने की शक्ति दिखाना है तो मानना भी पड़ेगा

जानना भी पड़ेगा और श्रद्धान करके जीवन में उसका आचरण भी करना पड़ेगा। यदि एक मरीज को अपना मलेरिया ठीक करना है तो डॉ. की दवा पर श्रद्धा करके उसे खाना ही पड़ता है, डॉ. यदि जहर मिली दवा दे दे तो भी मरीज उसे स्वीकार कर लेता है ऐसी श्रद्धा संतों के और भगवान के वचनों पर होना चाहिए।

यदि आपका पुण्य 10 प्रतिशत है और नरक गति के भविष्य को हमें बदलना है तो एक ही सुगम तरीका है कि अपने पुण्य का प्रतिशत बढ़ाएँ, इसे बढ़ाने के लिए हमें 24 घंटे में पुण्य क्रियाओं को बढ़ाना चाहिए, पहिले आप मन्दिर आते थे, 15 मिनिट लगते थे अब पूजन करने लगेंगे स्वाध्याय करने लगेंगे, जाप करने लगेंगे तो प्रतिदिन समय बढ़ेगा यदि आप इसके साथ नियम-संयम से रहते हैं तो आपका समय बहुत तेजी से बढ़ने लगेगा आपका पुण्य का प्रतिशत बढ़ने लगेगा इधर पुण्य का प्रतिशत बढ़ने से भविष्य नरक गति से ऊपर उठता हुआ तिर्यंच गति पर पहुँचेगा और धीरे-धीरे तिर्यंच गति से मनुष्य गति पर और मनुष्य गति से देव गति पर पहुँच जायेगा।

हमारा गलत भविष्य कोई और नहीं बदल सकता सिर्फ हम ही बदल सकते हैं क्योंकि भावों की परिणति से ही भविष्य बदलेगा और परिणति हमें खुद ही बदलना है दूसरा हमारी परिणति बदलने में निमित्त तो हो सकता है लेकिन बदल नहीं सकता है।

कहीं पर ज्ञान जलता है, कहीं अज्ञान छलता है,
ये मानव के विचारों के पहलुओं की विकलता है।
कहीं पाँवों तले गुल हैं, कहीं काँटों का है बिस्तर,
हमारे पाँव का काँटा सिर्फ हमसे निकलता है।।

भविष्य बदलने के लिये हमें आमूल-चूल स्वभाव को बदलना पड़ता है स्वभाव बदले बिना भाव नहीं बदलता और भाव बदले बिना कर्म नहीं बदलता व कर्म बदले बिना भविष्य नहीं बदलता है। यदि हमने आयुबंध

होने से पूर्व अपने भविष्य को नहीं बदला है या हमने आयुबंध होने से पूर्व अपने भविष्य को नहीं बदल पाया तो आयुबंध होने के बाद उस गति में अवश्य जाना पड़ता है, उम्र में घट-बढ़ हो सकती है लेकिन गति में बदलाव नहीं हो सकता है।

राजा श्रेणिक ने नरक आयु का अनुबंध कर लिया उसके बाद भगवान महावीर के समवशरण में साठ हजार जीवंत प्रश्न भगवान से करने पर भी और महान विशुद्ध परिणाम होने पर भी नरक गति का बंध समाप्त नहीं हो सका। यदि राजा श्रेणिक को नरक गति का बंध न हुआ होता और भगवान महावीर का समागम मिल गया होता तो उसी पर्याय से निर्वाण की प्राप्ति हो जाती इतनी परम उत्कृष्ट विशुद्धि राजा श्रेणिक की थी।

अत: आयुबंध हो गया या नहीं इस बात का पता उम्र के तिहाई भाग से चलता है, उम्र के तिहाई भाग शेष रहने पर अगली आयु का बंध करने का समय होता है, यदि किसी की उम्र 60 वर्ष की है तो 40 वर्ष तक आयुबंध नहीं होगा 41 वीं वर्ष में होगा यदि पहले योग्यकाल में आयुबंध नहीं हुआ तो अगली तिहाई उम्र शेष रहने पर बंध होगा इस तरह आठ तिहाई उम्रों में आयुबंध होगा यदि आठ योग्यकालों में भी आयु का बंध नहीं हुआ तो उम्र के अन्तिम 48 मिनिट में अगली आयु का बंध इमरजैंसी व्यवस्था में होगा उस समय तुम्हारा जो भी पुण्य पाप का प्रतिशत होगा उसी के आधार पर गतिबंध होगा और जैसा परिणाम होगा वैसी ही पर्याय निश्चित होगी।

अन्तिम समय में हमारी जिन्दगी के पाप-पुण्य के प्रतिशत के अनुसार ही परिणाम बनते हैं उसे कोई भी नहीं बदल सकता है। अन्तिम समय जीव का जीवन के व्यापार, लाभ, हानि, खाता व चिट्ठा का सन्तुलन है, इस सन्तुलन के अनुसार ही हमारा भविष्य निर्मित होगा इसी सन्तुलन से हमारा अगले जीवन का व्यापार चलेगा।

उपसंहार

किसी को प्रेम दे करके यहाँ पर दिव्यता पाओ,
लखो सच रूप को यारो यहाँ तुम भव्यता लाओ।
करो वह काम वो फिरदौस धरती पर उतर आये,
नहीं गर देव बन पाओ तो इक इंसान बन जाओ।।

यह सत्य है नरक और तिर्यच गति में जानवर- नारकी बनने का भविष्य सभी का आ जायेगा लेकिन एक देव बनने का भविष्य आना बहुत मुश्किल है। संतों का भविष्य देव गति का हो सकता है, यदि आप देव गति का भविष्य बनाना चाहते हो तो बहुत सरल है। बस आप संयम नियम से रहना प्रारंभ कर दीजिये। यदि यह असंभव प्रतीत हो तो इक इंसान बनने का प्रयास जरूर करना चाहिए और देव बनने की भावना निरंतर करते रहना चाहिये। आज की भावना ही कल का भाव बन जाती हैं।

न हमसे वास्ता जिनको वही मेरे हैं हमराही,
मेरी कश्ती चलाए जो समझता मैं उसे राही।
जमीं पर जी रहा, पर आसमां में उड़ रहा जाकर,
वही किरदार है अच्छा उसी की सोच है शाही।।

अंत में यदि आपको यह पता करना है कि हमें नरक गति का तिर्यच गति का या मनुष्य गति का आयु सहित बंध हो गया है या नहीं तो एक आगमोक्त तरीका यह है कि आप व्रती (संयमी) बन गये तो यह पक्का है कि आपको अभी नरक-तिर्यंच और मनुष्य आयु का बंध नहीं हुआ है और यदि आप संयमी नहीं बन पायें तो समझना आप को तीनों आयु में से एक का बंध हो चुका है।

संयमी केवल वही बन सकता है जिसे या तो देवायु का बंध हो गया है या अभी इन तीनों आयु और देवायु में किसी का भी बंध नहीं हुआ है।

भविष्य को जानने के लिए उम्र और मृत्यु के प्रकरण को जानना जरूरी है, उसके जाने बिना भविष्य का निर्धारण गलत निकल सकता है। उम्र और मृत्यु को जानने के लिए अगली पुस्तक ''उम्र और मौत'' को पढ़िये। जिसमें अकाल मौत, सकाल मौत, समाधि मरण और उम्र का विवेचन सरल ढंग से किया जायेगा।

बस इतना ही- जय महावीर।

आचार्यश्री द्वारा
रचित साहित्य की तालिका

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ
भिण्ड

श्री देवेन्द्र जैन
बड़ी बजरिया, बीना (सागर)
फोन - 07580-223344

सीपुर समता तीर्थ धाम
सीपुर
9828613614